ऐ ज़िन्दगी

कभी अल्हड, कभी मासूम, कभी मुस्कुराती लगती है,

बचपन की आगोश में, नए सपने सजाती लगती है ये ज़िन्दगी,

नन्ही उंगलियों के बीच, दबी पेंसिल में बोलती लगती है कभी,

और कभी कागज़ की तहों पे अक्षर और आकारों सी उभरती लगती है ज़िन्दगी,

आँखों में नए रंगों सी तैरती है कभी, और कभी कहकशो में छुपी लगती है ज़िन्दगी,

आओ मिलकर थामे हाथ और ले चले, उजालों की ओर ये ज़िन्दगी

लिखे वक़्त के सीने पे, एक नया दौर ऐ ज़िन्दगी ऐ ज़िन्दगी ।